Exam

Roll No. : .... Total Pages : 6

1601

Ist Year Arts Examination, 2018

RAJASTHANI SAHITYA

Paper–I

(आधुनिक गद्य)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

(खण्ड–अ) [Marks : 20]

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड–ब) [Marks : 50]

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड–स) [Marks : 30]

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(इकाई–I)

(i) ''आंपणौ खास आदमी'' एकांकी के एकांकीकार का नाम लिखिए।

(ii) मुबारक बैग और बखतावर सिंघ किस एकांकी के पात्र हैं ?

(इकाई–II)

(iii) ''डाक्टर रो ब्याव'' एकांकी का विषय है।

(iv) कोसीघळ कौन से राजपूतों की जागीर थी ?

(इकाई–III)

(v) ''रूंका वागी रीठ, भोट पड़ी माधा भड़ां।
तोडण भामा त्रीठ, आयौ दीसै ऊगलो।।''
यह पद्य किस पुस्तक से कौन-सी कहानी से लिया गया है।

(vi) लालजी ने किसे अपनी पुत्री बनाया ?

(इकाई–IV)

(vii) ''थे बारै जावो'' कहानी आज के समाज की कौन-सी समस्या उजागर करती है ?

(viii) 'सांढ' कहानी के कहानीकार कौन हैं ?

(इकाई–V)

(ix) गबरली पर कुदृष्टि कौन रखता है ?

(x) 'उकरास' कहानी संग्रह है या संस्मरण संग्रह। इस संग्रह के सम्पादक कौन हैं ?

खण्ड-ब

(इकाई–I)

2. ''देस भगत भामासा'' एकांकी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

3. ''सम्पादक री मौत'' एकांकी के मूल मन्तव्य को स्पष्ट कीजिए।

(इकाई–II)

4. ''सूरज री मौत'' कहानी आज के समाज की कौन-सी समस्या को उजागर करती है ? समझाइए।

5. ''नीलकंठी'' कहानी का मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए।

(इकाई–III)

6. 'पाबूजी' कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण प्रस्तुत कीजिए।

7. 'जसमल ओडण' कहानी नारी चरित्र को उजागर करने वाली कहानी है, कैसे ? समझाइए।

(इकाई–IV)

8. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए :

''हमलो करै तो पैला हड़ोल वाना ही आगै बढै अर सत्रुवां रो हमलो झेलै तो ही हड़ोल पै ही जोर आवै। सिंधु राग गावण लाग्या। हड़ोल रे अधबीचै, चूंडावतां रा पाटवी सळूबर रावजी

ऊभा व्हे बौल्या, "मरदां! दुसमणां पै घोड़ा ऊर दो। मर जाणों पण पग पाछो नी देणों। या हड़ोळ में रैवा री इज्जत, आंपां पीढ़ययां सू निभाय रियां हां, आज ई आपणी जिम्मेदारी ने पूरी निभावजो, देस सारूं मरणों अमर व्हेणो है।"

9. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए :

"मिलवा रो वगत टळग्यो, वी मानेतण रूसणों कर राख्यो व्हैला। डाबरनैणी बूबना रा नैणा में आंसू भर रिया व्हैला, कर सोच री व्हैला। वा तनक मिजाजण नाराज वहै री व्हेला, मन में ओळंबां देय री व्हैला। नाजकड़ी घबराय री व्हैला, बिछाणां पै पड़ी तड़क री व्हैला। कालळ रेखी बूबना रोय री व्हैला। वीं मीठा बोली ने भरोसो है म्हारै प्रेम पै जरूर वाट देख री व्हैला।

(इकाई–V)

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए :

"सगळा मोह में माता माता फिरै है। (हंस'र) दुनिया भी कई जाणसी। बामण रो माजनौ बिगाडयौ, जिण रौ औ' फळ है। (रूक'र) म्हैं सांखळा रौ मंडप परख आयौ। पैली ऊंडौ दरड़ौ खोद्यौ। दरड़ै में लकड़ा गेरया, ऊपर कांटी बिछाई। पछै झासां लगाई अर बारूद री मोटी तै' गेरी। ऊपर सोवणी सोवणी मखमली बिछायत करी। मंडप फूटरौ घणौ है। दहियां देखतां ई रींझ जासी।

11. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए :

"भारत री रेलां में दूजै दरजै रै डिब्बै में बड़णौ अर म्हारी कोठड़ी में बड़णो सिंहगढ़ विजय सूं कम कोनी हो। बार-बार मकान पळटणै रो विचार करता पण घरू बजट रै आंकड़ै कानी निजर पड़तां ई मन माठो पड़ जावतो। दिल्ली सरीखै शहर में इतनी ठौड़ मिलणी कम नीं ही। खिड़की रै नांव पर उण कोठड़ी में बिलानेक लाम्बो-चौड़ो झरोखो हो।

खण्ड-स

(इकाई-I)

12. "आपणौ खास आदमी" एकांकी का एकांकी के तत्त्वों की दृष्टि से मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए।

(इकाई-II)

13. "कांचळी" कहानी का कहानी के तत्त्वों की दृष्टि से मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए।

(इकाई-III)

14. "लाला मेवाड़ी" कहानी का कहानी के तत्त्वों की दृष्टि से मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए।

(इकाई-IV)

15. 'पिउसंघी' कहानी का कहानी के तत्त्वों की दृष्टि से मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए।

(इकाई–V)

16. राजस्थान की लोक संस्कृति में जीवन का समस्त विश्लेषण छिपा है तथा इसके विविध रूप सीधे अर्थ में ही प्रकट न होकर किन्हीं विश्वव्यापी प्रतीकों की ओर संकेत करते हैं। परम्पराओं एवं संस्कारों के निर्माण के निर्माण में यहाँ की लोक संस्कृति गरिमामयी और प्रेरणास्पद है। इसी कारण से राजस्थान की लोक संस्कृति अनुपम और जीवन्त रूप लिये हुए आज भी विश्व को अपनी ओर आकर्षित करती है। तो दूसरी ओर गूढ़ार्थक पौराणिक चरित्रों एवं सांस्कृतिक तत्त्वों को उभारने वाले राजस्थान के लोक प्रचलित दोहों, पदों और उलटवांसियों का भी विशेष महत्त्व है।